फिर वहीं

मर्मस्पर्शी कथाकार व उपन्यासकार

शरोवन

की सर्व प्रथम प्रकाशित कहानी

जनवरी 1974

***

‘ मेरे उस असीम प्यार के बदले में, जिसने तुम्हारी चौखट पर अपने प्यार की आरती के दिये जलाये तो ये नहीं सोचा कि, उनकी अग्नि में वह खुद भी कभी झुलस सकता है। तुम्हारी स्मृतियों में हरेक दिन की सुबह, नये रात की शबनम में भीगे हुये पुष्प तोड़ कर तुमको समर्पित करने के लिये लाया तो, ये ध्यान में भी नहीं आया कि हसरतों की झोली में सजाये हुये प्रीत के ये फूल कभी मेरे प्यार की अर्थी पर भी रखे जा सकते हैं ?’

***

रात्रि के दूसरे पहर में जब चन्द्रमा ने आकाश में अपना घूंघट खोल कर नीचे धरती पर झांक कर देखा तो वातावरण की सारी कालिमा को उसकी मासूम रश्मियों ने हाथ बढ़ा कर जबरन छीन लिया। चुप बैठी इस रात के सूने माहौल में लगता था कि निर्जनता की दीवारों में बंद ख़ामोशी भी जैसे निश्चिन्त होकर सो गई थी। मगर फिर भी शान्त और शलथ वातावरण में ना तो कोई

झन्कार थी और ना ही कोई आहट। चुप्पी और सन्नाटा। मदहोशी और मूकता; और इसी बेहद सन्नाटों से भरे वीराने में जतिन बैठा हुआ था। सड़क के किनारे एक मील के पत्थर पर। अपने शहर की बस्ती से काफी दूर। बिल्कुल ख़ामोश, गंभीर, मन से बहुत दुखी, बेहद निराश, नितान्त और बेहद अकेला।

एकान्त और मौनता में डूबे वातावरण में बैठे-बैठे वह बार-बार दूर कहीं क्षितिज के नीचे गिरते हुये किनारों को बेमकसद ही ताकने लगता था। अपने दिल की झोली से चुपचाप खिसक-खिसक कर विलीन होती हुई सारी हसरतों से बेखबर दूधिया रात के उस पूरे चन्द्रमा को इस आशा से निहारने लगता था कि जैसे वह उससे कोई राज़ की बात कहने जा रहा हो? कुछ पूछना चाहता हो वह? शायद उसकी भरपूर ख़ामोशी में डूबी उदासियों का कारण जान लेना चाहता हो वह?

हर पल बढ़ती हुई रात्रि की मौनता के इस एकान्त में केवल चांद था और अकेला, आवारा सा जतिन। वह अभी भी बार-बार दूर क्षितिज को धरती के होठों को चूमते देखता था तो कभी अपनी तारिकाओं की सजी बारात को लिये हुये मुस्कराते चन्द्रमा को। मगर कहीं से उसे कुछ भी तो प्राप्त नहीं हो पा रहा था। केवल ख़ामोशी और निस्तब्धता के अतिरिक्त, जो कि हर बार उसके विचारों के सिलसिले में आकर उलझ जाती थी। और जब भी आती थी तो बड़ी ही सहजता के साथ उसको उसके जीवन की वास्तविकता से अलग भी कर देती थी। उसकी वास्तविकता . . . !! सचमुच एक ऐसी हकीकत है जो कि उसके जीवन में चुपचाप ऐसे आकर प्रविष्ट हुई है, कि जतिन को महसूस होता है कि उसकी इस हकीकत के बगैर उसका जीवन जैसे बिल्कुल सूना रेगिस्थान और उजाड़ है।

उजाड़ . . .?

सोचते ही जतिन का चेहरा बैठी हुई इस ख़ामोश चांदनी में उदासी की ढेर सारी पर्तों से लिपट गया। इस प्रकार कि उसके दिल की गहराइयों में कहीं एक दर्द का गुबार सा उठा। बड़े ही ज़ोर का। जो बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ा कि उसका प्रभाव उसकी आंखों में उसकी ज़िन्दगी का फीकापन लेकर उपस्थित हो गया। मायूसी के बधंनों से चिपके हुये होठ कांप कर ही रह गये। भरी हुई पलकें कांपी और फिर बेबस होकर ठहर गईं।

कितना अधिक प्यार करने लगा है वह स्वच्छला को? ये जानते और समझते हुये भी कि प्यार पर तो केवल उसी का हक है कि जिसको वह खुद चाहेगी। वह जानता है कि स्वच्छला के बिना तो उसका जीवन कुछ भी नहीं है। कैसे जी पायेगा वह उसके बिना। अपने बदन से हर रोज़

चिपकने वाली बीमारियों और व्याधियों से संघर्ष करते हुये तो वह फिर भी जी सकता है, परन्तु अपनी खुबसूरत निगाहों में ठहरी हुई हसरतों का बोझ समेटने वाली स्वच्छला के बगैर वह कैसे जियेगा और किन उम्मीदों की आस पर अपने जीवन के दिन पूरे करेगा? हर बार सोचने और विचारने के पश्चात उसके मन मस्तिष्क में यही प्रश्न आ आकर टकराता था कि क्या हो गया है स्वच्छला को? क्यों वह चुप है? क्यों वह उससे दूर हटती जा रही है? क्यों वह इसकदर ख़ामोश हो गई है? आखिर क्यों वह ऐसा करने लगी है . . .?

क्यों? आखिर क्यों . . .?

जतिन ने एक बार फिर उदास और फीकी नज़रों से भरी चांदनी की रात्रि के ख़ामोश वातावरण में दूर तक निहारा तो उसे कहीं कोई भी नजर नहीं आया। अपने आस-पास एक उचटती सी दृष्टि डाली तो केवल अपने ही बजूद के सिवा उसे कोई दूसरी परछाई भी नहीं दिखाई दी। नहीं दिखाई दी तो फिर उसने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाल लिया। सफेद लिफाफा। इतना सफेद कि उसका भी सफेद रंग चारों ओर भरपूर फैली हुई दूधिया चांदनी के रंग से घुलमिल गया था। फिर लिफाफे को खोल कर उसने उसमें से एक पत्र को निकाला और फिर उसे रात की इस ख़ामोश फैली हुई चांदनी के मद्धिम प्रकाश में ही वह उसे पढ़ने लगा;

‘ मेरी स्वच्छला,

सुन कर अजीब सा तो लगेगा, पर सच तो ये है कि प्यार किसी की भी कोई निजी वसीयत तो नहीं होती है। ये एक वह चाहत होती है कि जिसमें अपनत्व होता है। अपनापन भरा होता है। ये हृदय की वह रेखा होती है कि जो जिस किसी को भी छू लेती है तो फिर वह उसे अपने दायरे में बंद ही करती जाती है। एक बार हसरतों और चाहतों की ये रेखा अपने किसी को जब अपने दायरे में कैद कर लेती है तो वह फिर कभी टूटती नहीं है। चटकती भी नहीं है। कमजोर भी नहीं पड़ती है। फैलती भी नहीं है। उसकी परिधि का क्षेत्र कभी फैलता तो नहीं है, बल्कि चारों ओर से सिमटता जाता है। छोटा होता जाता है, केवल इसी आस पर कि एक न एक दिन धीरे-धीरे सिमटते हुये वह अपने प्यार को अपने हृदय की कोमल धड़कनों में सदा-सदा के लिये छुपा लेगा। छुपाकर कैद कर लेगा, ताकि उसका प्यार केवल उसी ही का होकर रहे। मेरे नादान और नासमझ दिल ने भी तुम्हारे साथ यही सब किया है। बगैर तुमसे कहे और पूछे तुम्हें अपना बनाया है। ये जानते हुये भी कि तुम्हारे प्यार पर तो केवल उसी का हक है कि जिसको तुम

चाहो। मेरे चाहने और न चाहने से होता भी क्या है? परन्तु क्या करूं मैं? वास्तविकता से मुख मोड़ नहीं सकता हूं? और कल्पनाओं की खोखली दुनियां में बेमतलब भटकना मेरे दिल को गवारा नहीं है। जो सच्चाई है, एक हकीकत है, और जो एक वास्तविकता है, वह कभी न कभी तो इस संसार वालों के समक्ष आना ही है। जब सब कुछ सामने आना ही है तो फिर क्यों न मैं उसको अभी ज़ाहिर कर दूं।मैं तुम्हें प्यार करता हूं, क्या तुम भी मुझे चाहती हो? क्या पता? मैं तो कुछ भी इस बारे में अपना मत नहीं दे सकता हूं। तुम मेरे समीप आईं, केवल क्षण मात्र को, फिर ख़ामोश हो गई। देखा और कुछ कहा भी नहीं, फिर चुपचाप नज़र चुराकर चली भी गई। बस यही एक प्रश्न मेरे दिल को एक अनकहा दर्द देकर परेशान किये हुये है। एक प्रकार से मेरे दिल का सारा चैन छीने हुये है। मैं मर्द था, इसलिये पहले होकर मैंने अपने प्यार की भावनाओं को तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत किया तो ये मेरा कर्तव्य था। एक फर्ज था। मगर तुमने मेरी चाहत, मेरे प्यार को क्या समझा? क्या प्रतिक्रिया हुई तुम्हारे मन पर? तुमने क्या सोचा और क्या समझा? तुमने कुछ बताया नहीं? मेरे पवित्र प्रेम का तुम्हारी ओर से प्रत्युत्तर? तुम्हारी भरपूर ख़ामोशी? तुम्हारी चुप्पी, तुम्हारे चेहरे पर छाई हुई तुम्हारी ढेरों-ढेर अकारण ठहरी हुई गंभीरता? तुम्हारी आंखों में सूखी पत्तियों के समान इधर-उधर तैरते और भटकते हुये से कुछेक प्रश्न? शायद यही है तुम्हारा उत्तर? मेरे उस असीम प्यार के बदले में, कि जिसने तुम्हारी चौखट पर अपने प्यार की आरती के दिये जलाये तो ये नहीं सोचा कि उनकी अग्नि में वह खुद भी कभी झुलस सकता है। तुम्हारी स्मृतियों में हरेक दिन सुबह के नये रात की शबनम में भीगे हुये पुष्प तोड़ कर तुमको समर्पित करने के लिये लाया तो? ये ध्यान में भी नहीं आया कि हसरतों की झोली में सजाये हुये प्रीत के ये फूल कभी मेरी प्यार की अर्थी पर भी रखे जा सकते हैं? तुम चुप हो गई, मगर क्यों? कुछ तो कहना था तुम्हें? क्या प्यार की वास्तविकता को स्वीकारने की क्षमता तुममें नहीं है?

प्रिय स्वच्छला, सच कहता हूं कि तुम्हारी ख़ामोशी और गंभीरता को रोजाना देख-देख कर, मेरी जिन्दगी- उफ ! उजाड़ हुई जा रही है। काशः तुम अपनी ख़ामोशी के सहारे मुझसे पलायन होने का कारण तो मुझे बताती। कुछ तो मुझे जाहिर करती। मुझसे तुम्हारी ये बेरूख़ी और फीकापन सहन नहीं हो सकेगा। तुम कुछ तो कहती। केवल एक बार आकर सब कुछ कह दो। आओगी। आओगी न? जरूर आना। केवल एक बार ही। मैं तुम्हारी हरेक बात हरेक परिस्थिति का आदर के साथ सम्मान करूंगा। केवल एक बार सब कुछ उगल दो। अच्छा या बुरा, मीठा और कड़वा, पसन्द और नापसन्द, जो कुछ भी तुम्हारे मन में है, साहस करके कह दो। कह दो, ताकि मुझे ये तो पता चल सके कि तुम्हारी मूकता के पीछे वह कौन सा राज़ है। वह कौन सी मजबूरी और समस्या है, जो तुम्हारे हंसमुख चेहरे को न केवल मलिन ही बनाये हुये है, बल्कि मुझसे भी दूर किये हुये है। मुझे एक भ्रम में डाले हुये है।

वर्ष के इतने बड़े और महान सुन्दर पर्ब्ब पर तुम यहां, मेरे शहर तक आई और मैं तुमसे दो बात भी नहीं कर सका। कितनी बड़ी और बेमुकदद्र बदकिस्मती है मेरी। तुम जहां पर रहती हो, वहां मैं तुम्हें पत्र भी लिख सकता हूं कि नहीं? मुझे तो ये भी ज्ञात नहीं है। तुम मेरे लिये न जाने क्या-क्या सोचती होगी? इस बारे में भी मैं कुछ नहीं कह सकता हूं। अनुमान भी कहां तक लगा सकूंगा। फिर अनुमान के आसरे जीना भी कोई जीना है। तुम शायद न समझ सको कि ये सब मैं केवल तुम्हारे लिये ही लिख रहा हूं। लिख रहा हूं, इसलिये कि तुम इसे पढ़ कर सब कुछ जान और समझ सको। समझ सको और फिर अपने आप से कोई निर्णय ले सको। नाम भी मैंने इसमें तुम्हारा स्वच्छला रखा है। ये नाम भी तुम्हारे वास्तविक नाम की एक पलट है। अर्थ भी इसका समान ही है। सचमुच तुम ऊपर से नीचे तक, सारी आत्मा तक बिल्कुल स्वच्छ हो। पवित्र हो, आकाश की ऊंचाइयों तक। इन सारी बातों की मैंने एक कहानी बनाई है, जो जिस पत्रिका में भी छपेगी, तुम पढ़कर स्वंय ही समझ लेना। तुम्हारे प्रति मेरे हृदय में बसी हुई उन सारी मूक अभिलाषाओं और लालसाओं की एक दर्दभरी मार्मिक कहानी है। ऐसी गाथा है कि जिसको जो भी पढ़ेगा, उसका भी हृदय एक बार को पसीज़ जायेगा। पसीज़ जायेगा, बिल्कुल हथेली में बंद पसीज़े हुये दो-एक बताशों के समान। फिर तुम तो नारी हो। मानवी हो। मेरी ओर से संजोया हुआ मेरा प्यार हो। कितनी अधिक तुम सुन्दर हो। सुशील हो। साथ ही सुबह की ठंडी ओस से धुला हुआ फूल समान तुम्हारा हृदय भी है। ऐसी दशा में वह क्यों नहीं सहानुभूति और कशिश को प्राप्त करता है? क्यों नहीं वह सीलन के दायरे को स्पर्श कर पाता है? तुम भी एक नारी हो। तुम्हारे भी शरीर में एक छोटा सा हृदय है। सच-सच बताना कि कभी-कदार वह धड़कता भी है अथवा नहीं? यदि धड़कता है तो फिर किसके लिये? तुम्हारे अपने ही लिये या फिर कोई उस के लिये, जिसे केवल तुम ही जानती हो। मेरा विश्वास है कि तुम्हारा भी हृदय कभी न कभी तो किसी की अनुपस्थिति और वियोग में धड़क जाता ही होगा। वह कौन सी परछाई है जो तुम्हारी आंखों में आकर बसी और तुमको मुझसे हर क्षण दूर और दूर लेती जा रही है? तुम भी अपनी सहेली को इस बारे में जरूर ही बताती होगी। उससे कहती होगी कि एक धरती की चट्टानों पर बैठा हुआ मूर्ख चकोर न जाने क्यों आकाश के चन्द्रमा को पाने की लालसा रखे हुये है। तब ऐसी दशा में तुम्हारी सहेली के हृदय पर क्या प्रतिक्रिया होती होगी? मेरा मन कहता है कि उसका भी हृदय द्रवित हो जाता होगा। गंभीर हो जाती होगी वह भी। मेरी दशा को सोच-सोच कर वह तुम से बहुत सारी बातें भी कहती होगी। तब उसकी बातों को सुन-सुन कर तुम कभी गंभीर तो कभी मन ही मन मुस्करा उठती होगी?

तुम मेरे करीब आकर इस प्रकार से दूर हटती जा रही हो कि जैसे कुछ हुआ ही न हो। तुम्हारे हृदय में वह कौन सा दर्द है, जो तुम्हारी सारी चंचलता को क्षीण कर एक नीरसता का आवरण

तुम्हारे भोले से चेहरे पर मढ़ गया है। वह कौन सा भेद है कि जो तुम्हारी भरपूर ख़ामोशी और चुप्पी का कारण बना हुआ है? मुझसे आकर सब कुछ कह दो। कह सकती हो, अगर थोड़ा सा संयम बांधो। सच कहता हूं कि मैं तुम्हारी खुशियों और इच्छाओं के लिये अपनी सारी हसरतों का भी दम घोंटने से नहीं डरूंगा। न जाने तुम एक दूरी का अनुभव क्यों करती हो? विशेष रूप से मेरे प्रति। मेरे साथ ऐसा क्यों सोचा करती हो? मेरे बारे की तुम नस-नस को पहचानती हो। जिन्दगी का कोई भी भेद मैंने तुमसे छिपाया नहीं है। विशेष तौर पर तुमको तो सब कुछ बता ही दिया है। फिर कहूंगा भी मैं किससे? तुम ही तो मेरे लिये सब कुछ हो। मेरा संसार हो। मेरे हृदय की धड़कन हो। तुम्हारी एक झलक देखने की प्रतीक्षा में एक-एक दिन एक युग के समान व्यतीत करता हूं। तुम्हारी प्रतीक्षा में जब एक दिन व्यतीत हो जाता है तो लगता है कि जैसे एक पूरा जीवन ही निरर्थक बीत गया है। तुम्हारे मेरे नज़दीक आने से पहले ये कहने को तो था कि तुमने साथ कदम बढ़ाये ही नहीं थे। काश: तुम मेरे इतना पास तक नहीं आई होती। नहीं आती तो जैसा भी था, जी तो रहा ही था। जो भी था, वही बहुत था। परन्तु अब, तुम्हारी कमी ने वह रूख़ापन भी मेरे जीवन में भर दिया है, जो शायद तुम्हारी तरफ से मेरे प्यार की इबादत का एक उपहार ही हो सकता है।

नदी के दो किनारे सदियों से साथ-साथ चलते आये हैं, परन्तु कभी भी उनका मिलन नहीं हो सका है। लेकिन क्या वे साथ-साथ चलना भूल जाते हैं। तुम तो साथ-साथ चलना भी नहीं चाहती हो। ऐसे में मिलन की बात तो कोसों दूर रह जाती है। देखो कैसी अजीब बात है कि साथ चल कर मंजिल ढूंढने की प्रेरणा तो तुम्हीं ने मुझे दी थी। तुम साथ चली भी, तो क्षण मात्र को, फिर पीछे लौट गईं, और मैं वहीं का वहीं खड़ा हुआ तुम्हारा इंतजार कर रहा हूं। इसी आस में कि तुम आज लौटो, कल लौटो, और कब लौटो? मुझे मालुम है कि तुम पीछे लौट रही हो, और मैं एक बार फिर वहीं आ गया हूं, कि जहां से तुमने मुझे अपने साथ चलने के लिये बाध्य किया था। तुम साथ चली भी, पर कुछ दूर तक ही, फिर साथ छोड़ भी गईं। बड़ी आसानी के साथ तुमने ख़ामोश होकर अपनी पलकें भी बन्द कर लीं। और भूल गईं। शायद तुम्हें ज्ञात नहीं कि लेखक लोग कितने कोमल दिल के हुआ करते हैं। दूसरों के दुख देखने भर से ही उनकी पलकों में आंसू छलक आते हैं। फिर ऐसे में उनका खुद का दर्द? तुम स्वंय ही अनुमान लगा सकती हो। यदि सोचो तो इस अनकहे दर्द का एहसास भी तुम्हें हो ही जायेगा कि, प्यार के मोती बटोरने की चाह में जब हाथों में कांटे चुभने लगते हैं तो ज़ख्मों पर मरहम तक लगाने की इच्छा नहीं होती है। जी करता है कि केवल हाथों में बने घावों को प्यार की मिली सौगात समझ कर अपने बदन और आत्मा से चिपकाये रहो।

आज जैसे सब कुछ ही कह लेना चाहता हूं। ये सोच कर कि इस रात के पश्चात कल .जिन्दगी का सबेरा हुआ न हुआ, कौन जाने? मेरे पाठक मुझ पर अक्सर दोष लगाया करते हैं कि मैं क्यों इतनी दर्दभरी, मार्मिक कहानियां लिखा करता हूं? मगर आज तक ये किसी ने नहीं पूछा कि मेरी कलम में इसकदर दर्द का अम्बार भर देने वाला है कौन? ठीक है कि लेखन एक कला है, और कला की ये निधि केवल ईश्वर की तरफ से ही मिला करती है, मगर इस लेखनकला में दर्द और दुख भरने वाला अपना प्यार ही होता है न। ज़रा सोचो कि कोई अन्य है जो इस तरह तुम्हारी आरती नहीं, पूजा नहीं, बल्कि प्यार की इबादत करता होगा। किसी ने सच ही तो कहा है कि प्यार और पसंद में काफी अन्तर होता है। ये संसार बहुत बड़ा है, और इसकी विशालता देखते हुये तुम्हारी पसंदों की शायद गिनती भी नहीं की जा सकती होगी? लेकिन इतना अवश्य ही सोचना कि दिल से चाहने वाला खुदा किसी को भी दुबारा नहीं दिया करता है। मैं जो कुछ भी कह रहा हूं, तुम इसे मेरी दीवानगी की कोई शिकायत भी समझ सकती हो, या दीवाने मन का .खिताब देकर थोड़ी देर को मेरी मूर्खता समझ कर हंस लो, फिर सदा के लिये टाल जाओ।

तुम्हें शायद मालुम भी नहीं होगा कि तुम्हारे यहां रहते हुये भी मेरी आंखों में वही फीकापन था, .जिन्दगी में वही सन्नाटा था, चेहरे पर वही नीरसता की पर्त थी और दिल के कोने-कोने में बसी हुई ढेर सारी वही घोर गंभीरता थी, जो कि आज भी है। तुम तो अपने कमरे की खिड़कियों को बन्द करके चैन और शान्ति की नींद सोती होगी, और मैं यहां शहर के बाहर सूनी सड़क के इस मील के पत्थर पर बैठा हुआ ख़ामोश रात्रि की निस्तब्धता को ताकता रहता हूं। बहुत देर तक। यहां तक कि चन्द्रमा भी अपना मुंह छिपा कर क्षितिज के एक किनारे सरक जाता है। सारी रात आकाश के आंचल से टपकने वाली ठंडी शबनम की बूंदें मेरे शरीर से चिपकती रहती हैं। रात चुपचाप पड़ती रहती है। तारिकायें मेरी दशा और परिस्थिति को देखते हुये अपनी बेबसी को ज़ाहिर करते-करते अपना मुख छिपा लेती हैं। मगर मैं नहीं उठता हूं। यहां घन्टों बैठा रहता हूं। बैठा-बैठा केवल तुम्हें याद करता रहता हूं। तुम्हारे बारे में ढेर सारी बातों को एक क्रम से दोहराता रहता हूं। तुम मेरी इन सारी परिस्थितियों, दशा व परेशानी को नहीं जानती होगी। मैं बताना भी नहीं चाहता हूं। तुम खुद भी तो समझदार हो। अच्छी तरह से समझ सकती हो। समझती भी होगी। ये और बात है कि समझते हुये भी ना समझ ही बनी रहो। ख़ामोश निगाहों से प्यार का निमंत्रण देकर तुमने ये कहानी बनाई थी। इसमें तुम्हारी उपस्थिति की थोड़ी देर को झंकार भी हुई, मगर तुरन्त विलीन भी हो गई। मेरे साथ चलते-चलते अचानक ही तुम पीछे लौट गईं, और मैं फिर वहीं आकर खड़ा हूं, जहां से तुमने साथ चलने के लिये बाध्य किया था।

इतना सारा कुछ ब्यान करने के पश्चात भी यदि तुम फिर भी मौन रहीं तो मैं फिर तुमसे कभी भी कुछ नहीं कहूंगा। कभी तुमसे कोई शिकवा या शिकायत भी नहीं करूंगा। यही सोच कर अपने दिल को तसल्ली दे लूंगा कि मैं फिर से अपने पिछले दिनों में लौट आया हूं। अपनी जीवन नैया को केवल भाग्य की लहरों के सुपुर्द कर दूंगा। यदि किस्मत में किनारा होगा तो मिल ही जायेगा। निर्मल जल की नदी के पास आकर भी यदि किनारा नहीं मिला तो फिर सूखे रेगिस्थान की धूल में बेतहाशा दौड़ूंगा। फिर जहां भी गिरूंगा, जिस जगह भी टकराऊंगा, कहीं भी ठोकर खाऊंगा, तो कम से कम किनारा मिलने का एहसास तो होगा। प्यासे पंछी को केवल पानी का दिख जाना ही बहुत होता है। मैंने तुम्हारी पूजा की, तुम्हें प्यार किया, तुम्हें दिल की समस्त हसरतों से भी बढ़ कर चाहता रहा, मेरे प्यार की पूजा का फल, देवी समझ कर तुमने क्षण मात्र को दर्शन तो दिया, यही मेरे लिये बहुत है। फिर पुजारी को चाहिये भी क्या? दर्शन मात्र से ही उसकी वर्षों की तपस्या सफल हो जाया करती है। वरदान तो बिरलों को ही प्राप्त होता है। तपस्या और वरदान में बहुत अन्तर होता है। बिल्कुल वैसा, जैसा कि दूरी और नज़दीकी में और मन्दिर तथा एक साधारण घर में होता है।

समाज की पुरातन दीवारों को आज तक कोई भी प्रेम की युगल जोड़ी नहीं तोड़ पाई है। तोड़ना तो अलग बल्कि वह स्वंय समाज के कटु नियमों में जकड़ कर रह गई है। ऐसी प्रेम की भावनायें सदैव ही कुंठित होकर रही हैं। रीति और रिवाज आज से नहीं बल्कि सदियों से प्रीत का दुशमन बन कर अपने सारे नातों को बखूबी निभाते आये हैं। ऐसी परिस्थिति में मैं और तुम कर भी क्या सकते हैं? आखिरकार हैं तो एक ही मानव प्रणाली के अंग ही। मगर फिर भी तुम यदि चाहो तो मेरा साथ देकर समाज की ऐसी पुश्तैनी रीतियों को तोड़ने में सहायता भी कर सकती हो। जंजीरें टूटेंगी नहीं तौभी हम सब के लिये एक आदर्श तो बन ही जायेंगे। लेकिन ये होगा तब ही जब तुम खुद चाहोगी। पत्थरों पर भी घास उग आया करती है। कोशिश करके मरूस्थल में भी कुंआ खोदा जा सकता है। जल तो हर जगह है। कमी है तो केवल परि्रम करने वालों की। खैर! ये तो बातें हैं, और बातें ही रह भी जाती हैं। हर रोज़ एक नवीन सुबह उदय होती है। नया दिन मुस्कराता हुआ निकलता है। फिर वह भी ढलता है। तब संध्या सूर्य की लालिमा को अपने अंक में छिपाते हुये रात्रि की कालिमा में परिणित हो जाती है। इसी प्रकार प्रकृति का क्रम चलता रहता है। नई चीज यदि कोई होती है तो वह हैं नित्य की होने वाली नई-नई घटनायें। शाम ढलने के पश्चात कुछ भी नहीं बचता है। केवल पुरानी बीती हुई बातों को अतीत के स्मृतिपटल पर लाकर दोहराने के सिवा। केवल बार-बार दोहराना ही तो बच पाता है। यूं तो हर रोज़ सांझ ढलती है, और नया दिन नया प्रकाश लेकर आता है, परन्तु मानव जीवन की शाम केवल एक बार ही ढलती है।

उम्र बीतने के पश्चात गुज़रे हुये दिनों का एक पल भी कभी मानव को आज तक दोबारा नहीं मिला है।

यूं तो जीवन में तुम्हें बहुतेरे प्यार करने वाले मिलेंगे। बहुत सारे करते भी होंगे। ज़िन्दगी के हर कदम पर एक नया जतिन बड़े ही जोश के साथ तुम्हारी राह देखता होगा, मगर सोचना कि जतिन के लिये स्वच्छ निगाहों से देखने वाली केवल एक ही है। तुम्हारे जीवन में पग-पग पर चाहने वाले होंगे, मगर मेरी राहों में केवल एक ही है। और वह कौन है? ये तुम भी अच्छी तरह से जानती होगी। वैसे मैं भी यूं हार मानने वाला नहीं हूं। मैंने भी सोच रखा है कि बचपन से तुम्हारे पीछे-पीछे चल रहा हूं। अब देखना ये है कि तुम मुझसे और कितना आगे तक जा सकती हो। तुम्हारा मन जीतने, और तुमको सदा को अपना बनाने के लिये जीवन में हरेक संघर्ष करता रहूंगा। यदि शरीर ने साथ दिया तो पीछे नहीं हटूंगा।

मेरे पत्र को पढ़ कर यदि तुम फिर भी मौन ही रहीं तो फिर मैं भी एक लम्बे अरसे के लिये चुप हो जाऊंगा। ख़ामोश ही नहीं बल्कि तुम्हारी दृष्टि से भी लोप हो जाऊंगा। मगर जब वापस आऊंगा तो फिर एक नया जतिन बन कर। बिल्कुल वैसा, जैसा कि तुम सोचती होगी। अभी तो शायद मुझमें भी बहुत कमियां हो सकती हैं। मगर डरता भी हूं कि इतने लम्बे समय में स्वंय को अच्छा बनाने और प्रतीक्षा की घड़ियां गिनते-गिनते कहीं संध्या ही न ढल जाये, और मैं रात की कालिमा में तुम्हारे उस द्वार को खटखटाऊं जो कि केवल तुम्हारे सहारे किसी और का होगा। तुम मेरी बन कर भी किसी और की बन चुकी हो? उसकी, जिसको कि तुमने चाहा होगा। कभी कभी ये अज्ञात भय मेरे दिल में समा जाता है। यदि तुमको मुझसे छीन लिया गया तो कहीं मैं कोई जीवन भर का ला-इलाज रोग ही न लगा डालूं।

अब और क्या लिखूं। सब कुछ तो बता दिया था, और जो कुछ बच रहा था, वह भी यहां लिख दिया है। बाकी तुम खुद भी तो समझदार हो। मैं अधिक कुछ कह भी तो नहीं सकता हूं। बस प्रतीक्षा ही करता रहूंगा। उस समय की जब कि तुमको किसी की कमी महसूस होगी। क्योंकि नारी के जीवन में एक समय ऐसा भी आता है कि जब कि उसकी इच्छा होती है कि कोई उसको चाहे। उसे पसंद करे। उसके बारे में दिन-रात सोचे। उसे प्यार ही न करे बल्कि अपने अंक से भी लगा ले। उसे केवल देखे ही नहीं बल्कि अपनी पलकों में भी बन्द कर ले। कभी तो तुम्हारे साथ

ऐसा होगा ही। ये विश्वास है मेरा, और इसी विश्वास को अपने जीने का आधार बनाकर मैं एक आशा बन कर तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहूंगा।

जतिन।'

जतिन ने निराश कामनाओं से पत्र को मोड़ कर फिर से लिफाफे में बन्द कर लिया। इस पत्र को वह अब डाक में डाल देगा। डाल देगा, अपनी स्वच्छला के लिये। उस के लिये जो कि उसकी धड़कन बन कर उसके जीने का मकसद बनी हुई है। वह जानता है कि कितने प्रेम से अपनी समस्त हसरतों को जमा करके उसने बैठ कर इस पत्र को लिखा था। पत्र के एक एक शब्द में जैसे उसने अपनी सारी धड़कनों को भी रख दिया था। इतना तो प्यार करने लगा था वह स्वच्छला को। इसकदर कि जिसकी कामना में उसकी सारी आस्थाओं को तिनके-तिनके जमा करने की ललक में वह खुद भी बिखरने लगा था।

जतिन ने उदास और निराश दृष्टि से दूर आकाश को देखा। चन्द्रमा न जाने कितनी ही देर से बहुत ख़ामोशी से चुपके-चुपके उसकी हरेक मुद्रा को निहार रहा था। साथ ही निर्दोष और मासूम नादान तारिकायें भी उसकी मनोदशा से बेखबर उसको देखती थीं और चमकती थीं। चमकती थीं और फिर मद्धिम हो जाती थीं। जाड़े का मौसम था। शरद ऋतु की इस कड़ाकेदार सर्द रात में कोहरे के कण अब सारे वातावरण को ढांकने लगे थे। चारों ओर सूनी और नंगी सड़क पर एक वीरानी और सन्नाटा छाया हुआ था। निस्तब्धता और भरपूर ख़ामोशी। एक ऐसी ही ख़ामोशी स्वच्छला की यादों ने उसके जीवन में भर दी थी। एक ऐसी बात कि जिसको वह ना तो किसी से कह सकता था, और ना ही छुपा कर वह जी सकता था। दिल की किताब पर प्यार के अक्षर लिखने की चेष्टा में उसे क्या मालुम था कि सारी स्याही ही फैल कर उसके प्यार के असर को छुपाने का प्रयास करेगी।

जतिन ने फिर एक बार अपने आस-पास देखा। जिस पर वह बैठा था, उस मील के बेजान और संवेदनहीन पत्थर को देखा। वह जानता है कि इस मील के पत्थर से ही उसने अपनी स्वच्छला के साथ प्रीत के रास्तों पर पग बढ़ाये थे। इसी मील के पत्थर पर वह एक दिन अपनी स्वच्छला के साथ अनजाने में आकर बैठ गया था। तब स्वच्छला ने बातों-बातों में उसका हाथ अपने हाथ

में थाम लिया था तो वह उसे आश्चर्य से निहारने लगा था। तब उसे मालुम है कि स्वच्छला ने उससे कितनी हसरतों से कहा था कि,

‘अपनी किस्मत भी अजीब ही है। मैंने हाथ तो थाम लिया है तुम्हारा, मगर मैं तो ये भी नहीं जानती हूं कि इस पर अधिकार करने वाली कौन है?’

जतिन ने उस समय स्वच्छला को कोई भी उत्तर नहीं दिया था। नहीं दिया था केवल इसलिये कि वह उससे कैसे कह देता कि,

‘अधिकार रखने वाली ही ने तो उसका हाथ पकड़ा है।’

इस घटना को न जाने कितने ही दिन, कितने ही महीने और कितने ही वर्ष बीत चुके थे। स्वच्छला की बातें यादों की धुंध में आई-गई सी हो चुकी थीं। दोनों कालेज से निकले तो उधर स्वच्छला दूसरे शहर चली गई थी। शहर छूटा तो साथ भी छूट गया। और आज? आज वह फिर से वहीं पर लौट कर आ गया है, जहां से स्वच्छला ने उसके साथ चलना आरंभ किया था। स्वच्छला अपनी चुप्पी और ख़ामोशी के सहारे उससे जैसे चुपचाप दूर हटती जा रही है, और वह अभी तक वहीं है, जहां से वह उसके साथ चला था। आज उसी स्थान पर ठहरे हुये वह स्वच्छला के वापस आने की राह देखे जा रहा है। एक बार फिर वहीं आ चुका है, कि जहां से उसने अपने प्यार की यात्रा का पहला पग रखा था।

जतिन ने चुपचाप निराश निगाहों से दूर वातावरण में फैली हुई चांदनी की चादर को देखा। मौनता और ख़ामोशी ने जैसे सारी रात के माहौल को अपने बाहुपाश में जकड़ रखा था। वातावरण की भरपूर चुप्पी को देखते हुये जतिन को महसूस हुआ कि रात की ठंडक से सनी भरपूर ख़ामोशी उसके जीवन की नीरसता का दामन थाम कर पल पल में उसकी मनोदशा पर हॉवी होती जा रही है, और वह किंकर्तव्यविमूढ़ सा बना कुछ भी नहीं कर पा रहा है।

समाप्त।